भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना का प्रपत्र

<u>मैयरा पायिबी : शोध, प्रलेखन एवं लघु वृत्तचित्र निर्माण</u>

[File No. 28-6/ICH-Scheme/2015-16/30
21/04/2016]

1. प्रस्तावित योजना का कार्यक्षेत्र राज्य -

<u>उत्तर-</u> प्रस्तावित योजना का कार्यक्षेत्र **मणिपुर** प्रदेश है |

2. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत/परम्परा का नाम (क्षेत्रीय, स्थानीय, हिंदी एवं अंग्रेज़ी में)-

<u>उत्तर-</u> मैयरा पायिबी (**Meira Paibi**)

3. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा से सम्बंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा, उपभाषा तथा बोली का विवरण -

<u>उत्तर-</u> योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा से सम्बंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र **मणिपुर** है और इस क्षेत्र की भाषा '**मेतेई' (Meiteilon / Manipuri)** है | जिसकी लिपि भी मेतेई ही है | किन्तु वर्तमान में लेखन के लिए बंगाली लिपि का ही अधिक प्रचलन है | मेतेई भाषा, मणिपुर प्रदेश के मूल मेतेई समुदाय द्वारा बोली जाती है | **मेतेई भाषा** मणिपुर के रहने वाले **मेतेई समुदाय की मातृभाषा** है |

मणिपुर प्रदेश में कुल 9 जिले हैं | और यह **मेतेई समुदाय मणिपुर के घाटी क्षेत्र** अर्थात चार जिलों 'पूर्वी इम्फाल, पश्चिमी इम्फाल, बिष्णुपुर और थोउबाल में बहुसंख्या में बसा है | मेतेई समुदाय के अलावा मणिपुर में रहने वाले अन्य समुदायों (नागा, कूकी, नेपाली तथा अन्य बाहरी लोग जिनमें मुस्लिम भी शामिल हैं) के लोग भी संपर्क भाषा के लिए मेतेई (मणिपुरी) भाषा का उपयोग करते हैं | लेकिन मेतेई भाषा इन जनजातियों की मातृभाषा नहीं है | अपनी जनजाति या कबीले में बात करने के लिए ये अपनी जनजातीय बोली का प्रयोग करते हैं | जनजाति के अनुसार इन समुदायों की मातृभाषा भी अलग-अलग हैं |

4. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा से स्पष्ट रूप से सम्बंधित प्रतिनिधि ग्राम, समुदाय, समूह, परिवार एवं व्यक्ति का नाम एवं संपर्क (विवरण अलग से संलग्न करें)-

<u>उत्तर-</u> मैयरा पायिबी एक ऐसी परंपरा है जिसकी नींव 19वीं शताब्दी के अंत में और 20वीं शताब्दी के प्रारंभ में दिखाई देती है | और वर्तमान में इसका प्रभाव क्षेत्र पूरा मणिपुर है | आज मणिपुर में मैयरा पायिबी के कई संगठन कार्यरत हैं | जो सरकारी रूप से पंजीकृत भी हैं और कई संगठन पंजीकृत नहीं भी | उनमें से कई प्रमुख संगठनों से इस परियोजना कार्य के सन्दर्भ में संपर्क किया गया | इस परम्परा से सम्बंधित प्रमुख संगठन तथा उनके प्रतिनिधि का विवरण निम्नलिखित है |

<u>प्रतिनिधि संगठन विवरण क्रमांक एक</u>

1. **संगठन का नाम - 'All Manipur Women's Reformation and Development Samaj'** (इसे **नूपी समाज** के नाम से भी जानते हैं)
2. **प्रमुख व्यक्ति का नाम -** थोकचोम रमानी देवी
3. **कार्यालय पता - पैलेस कंपाउंड, भाग्यचन्द्र ओपन एयर थिएटर के सामने, इम्फाल पश्चिम, मणिपुर, भारत**
4. **संपर्क-** 8794171643

<u>प्रतिनिधि संगठन विवरण क्रमांक दो</u>

1. **संगठन का नाम - 'Apunba Manipur Kanba Ima Lup' (AMKIL)**
2. **प्रमुख व्यक्ति का नाम -** फनजोउबम ओन्गबी सखी
3. **कार्यालय पता -** कैशम्पट, इम्फाल पश्चिम, मणिपुर, भारत

<u>प्रतिनिधि संगठन विवरण क्रमांक तीन</u>

1. **संगठन का नाम -** "बामोनकाम्पु वीमेन वेलफेयर एसोसिएशन"
2. **प्रमुख व्यक्ति का नाम -** सागोलसेम खोम्दोम्बी देवी
3. **कार्यालय पता -** बामोनकाम्पु, मखा लेकाई, इम्फाल पूर्व, मणिपुर, भारत
4. **संपर्क-** 9612157546

5. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्वों की जीवंतता का विस्तारित भोगोलिक क्षेत्र (ग्राम, प्रदेश, राज्य, देश, महादेश आदि) जिनमें उनका अस्तित्व है / पहचान है |

<u>उत्तर-</u> - वर्तमान में मणिपुर प्रदेश में कुल 9 जिले हैं, जिसमें 2011 की जनगणना के अनुसार कुल 51 शहरी इलाके और 2582 ग्रामीण इलाके हैं और वर्तमान में मणिपुर की कुल जनसंख्या 2,855,794 (लगभग 28.56 लाख) है | जनसंख्या के घनत्व की दृष्टि से पश्चिमी इम्फाल जिले के बाद थोउबाल जिला दूसरे क्रमांक पर है | 2011 में हुई जनगणना के उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार जनसंख्या की दृष्टि से मणिपुर की 65.5 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्र में रहती है और 35.5 प्रतिशत आबादी शहरी क्षेत्र में रहती है |

अत: योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परंपरा के तत्वों की जीवंतता का विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र मणिपुर के घाटी क्षेत्र के चार जिले 'पूर्वी इम्फाल, पश्चिमी इम्फाल, बिष्णुपुर और थोउबाल हैं | इन जिलों में मेतेई समुदाय के लोग बहुसंख्या रहते हैं |

अन्य जिले पहाड़ी क्षेत्र हैं, जहाँ मेतेई समाज बहुत कम संख्या में है | इसलिए प्रस्तावित परियोजना का अस्तित्व मुख्यत: इन्हीं चार जिलों में विशेष रूप से विद्यमान है | किन्तु इसका प्रभाव मणिपुर के हर क्षेत्र में होता है |

6. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा की पहचान एवं उसकी परिभाषा/उसका विवरण

    1. मौखिक परम्पराएं एवं अभिव्यक्तियाँ

    (भाषा इनमें अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के एक वाहक के रूप में है)

    2. प्रदर्शनकारी कलाएं
    3. **सामाजिक रीति-रिवाज़, प्रथाएँ, चलन, परम्परा, संस्कार, एवं उत्सव आदि**
    4. प्रकृति एवं जीव-जगत के बारे में ज्ञान एवं परिपाटी व अनुशीलन प्रथाएं
    5. पारंपरिक शिल्पकारिता
    6. अन्यान्य

<u>उत्तर-</u> योजना के अंतर्गत प्रस्तावित विषय एक **सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत / परम्परा है** | जिसका प्रभाव पूरे मणिपुर प्रदेश में है | किन्तु विशेषत: इसका प्रचलन और प्रभाव मणिपुर के घाटी क्षेत्र के चार जिलों में प्रमुख रूप से है | ये चार जिले हैं - **पूर्वी इम्फाल, पश्चिमी इम्फाल, थोउबाल तथा बिष्णुपुर** | ये चार जिले मणिपुर प्रदेश की मूल आबादी मेतेई समुदाय बहुल हैं |

7. कृपया योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा का एक रुचिपूर्ण सारगर्भित संक्षिप्त परिचय दें |

<u>उत्तर-</u> **मैयरा पायिबी** मणिपुर समाज में स्थापित एक सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा है, जिसका नेतृत्व **मेतेई महिलायें** करती हैं | **मैयरा** का अर्थ है- **मशाल** तथा **पायिबी** का अर्थ है **उस मशाल को धारण करने वाली महिला** | जलती मशाल धारण की हुई महिला को मणिपुरी भाषा में **मैयरा पायिबी** कहा गया है | मेतेई महिलाएं ये मशाल अकारण ही धारण नहीं करती, इसके पीछे वृहद् इतिहास है, | जो मणिपुर की पहचान को अधिक व्यापक तथा ऐतिहासिक परिचय को और अधिक गौरवान्वित करती है | इस परम्परा के वर्तमान नाम मैयरा पायिबी की उपयोगिता को रुचिपूर्ण तथा सार्गाभित तरीके से इस प्रकार समझा जा सकता है |

जब मणिपुर में पुरुषों द्वारा नशे और व्यसन के बाद हिंसा (घरेलू एवं सार्वजनिक दोनों) की गतिविधियाँ बढ़ने लगीं तो इसका प्रतिकार करने का साहसिक प्रयास वहां की महिलाओं ने ही किया | गाँव की महिलाएं एक स्थान पर एकत्रित होने लगीं | ये महिलायें घरों से पैदल ही निकलती थीं और गाँव के हर छोर का निरीक्षण करती थीं | कोई पुरुष यदि शराब पीता, जुआ खेलता, घर में अपनी पत्नी और बच्चों से मारपीट या गाली-गलौच करता हुआ मिलता था तो उसका विरोध करती थीं | पीड़िता को बचाती थीं | शराबी व्यक्ति की सार्वजनिक रूप से निंदा करती थीं ताकि लज्जित होने के भय से वह मदिरा सेवन का त्याग करे | इतने पर भी शराब पीता व्यक्ति यदि नहीं मानता था तो उसे दण्डित करती थीं, आवश्यकता अनुसार अधिक दंड देने के लिए उस पर जुर्माना भी लगाती थीं और भविष्य में दुबारा ऐसा ना करने की सलाह देते हुए, बाहर शराब पीते पुरुष को घर तक छोड़कर आती थीं |

महिलाओं के विरोध का यह तरीका नितांत अहिंसात्मक और शान्तिपूर्ण था |इतना ही नहीं, मणिपुर में शासनिक दृष्टि से भ्रमित नीतियाँ बनाने और उनका क्रियान्वयन करने वालों के

खिलाफ भी मणिपुरी महिलाओं ने कई बार मोर्चा खोला है | यह सभी प्रयास वास्तव में सामाजिक-सांस्कृतिक शुचिता बनाये रखने के लिए ही किये गए, जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका मेतेई महिलाओं ने निभाई | घर में पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाने से लेकर मैयरा पायिबी बनने तक की एक लम्बी यात्रा और अनूठे प्रयासों, विफलताओं-सफलताओं तथा आज इसके मूल स्वरूप में आते बदलाव की वृहद् यात्रा को शोध प्रलेखन में लिखा गया है |

8. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के अधिकारी व्यक्ति और अभ्यासी कौन हैं ? क्या इन व्यक्तियों की कोई विशेष भूमिका है या कोई विशेष दायित्व है इस परम्परा और प्रथा के अभ्यास एवं अगली पीढ़ी को संचरण के निमित्त ? अगर है तो वो कौन हैं और उनका दायित्व क्या है ?

<u>उत्तर-</u> यह परम्परा मणिपुर में लम्बे समय से प्रचलन में है | इस परम्परा के अधिकारी और इन्हें आगे बढ़ाने वाली मणिपुर में मेतेई समाज की ही महिलाएं हैं | ये महिलाएं विवाहित होती हैं | विशेषकर वे महिलाएं जिनकी आयु 40-45 से अधिक की है | प्रमुख मैयरा पायिबी महिलाओं का यह विशेष दायित्व बनता है कि वे समाज हित में इस परम्परा की जीवन्तता के लिए आने वाली पीढ़ी को तैयार करें और इस प्रथा को आगे बढाने और निरंतर बनाये रखने का दायित्व उन्हें सौंपें | मैयरा पायिबी की कार्यपद्धति और इस प्रथा में लोगों का विश्वास इतना अटूट है कि धीरे-धीरे महिलाएं इस समूह से जुडती चली जाती हैं | यह मणिपुर की सबसे सशक्त सामूहिक परम्परा है | किन्तु शनैः-शनैः इस परम्परा का मूल स्वरूप परिवर्तित होता जा रहा है |

9. ज्ञान और हुनर / कुशलता का वर्तमान में संचारित तत्त्वों के साथ क्या अंतर सम्बन्ध है?

<u>उत्तर-</u> इस परम्परा का मूल तत्व अपने समाज की सांस्कृतिक समृद्धि बनाये रखना है | समय अनुसार आवश्यकता पड़ने पर मैयरा पायिबी का कर्तव्य समाज में असामाजिक गतिविधियाँ होने/बढने से रोकना भी है | इस हेतु यह समूह अपनी निश्चित पद्धति अनुसार कार्य करता है | आज जब मणिपुर में लम्बे समय से अशांति व्याप्त है ऐसे में मैयरा पायिबी समाज की भूमिका अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाती है |

क्योंकि यह एकमात्र समूह है जो संगठित रूप से कार्य करता है और जिसे जन-जन का विश्वास प्राप्त है | इनकी सामूहिक कुशलता के बल पर ही मणिपुर में कई बड़े बदलाव आये हैं और समाज में सामजिक-सांस्कृतिक शुचिता को फिर से स्थापित करने में मदद मिली है | वर्तमान में भी उनकी सामूहिक शक्ति की सकारामक दिशा में आवश्यकता है |

जिस मूल विचार के साथ मैयरा पायिबी ने अपना वर्तमान अस्तित्व पाया है वास्तव में उसी मूल स्वरूप के अंतर्गत आज की गतिविधियों का सञ्चालन भी आवश्यक है | क्योंकि वर्तमान में जो लोग मैयरा पायिबी समाज का नेतृत्व कर रहे हैं वे भी अंततोगत्वा उसी परम्परा को आगे बढ़ा रहे हैं जिसकी नींव आज से वर्षों पहले समाज सुधार और सांस्कृतिक समृद्धि के लिए पड़ी थी |

10. आज वर्तमान में सम्बंधित समुदाय के लिए इन तत्त्वों का सामाजिक व सांस्कृतिक आयोजन क्या मायने रखता हैं?

<u>उत्तर-</u> सर्वविदित है कि पिछले लम्बे अरसे से पूर्वोत्तर भारत कुछ हद तक अशांत रहा है | समय समय पर कुछ असामाजिक - अरष्ट्रावादी तत्व राष्ट्रीय संपत्तियों और नागरिकों

को .हानि पहुंचाते हैं | ऐसे में मैयरा पायिबी की भूमिका और अधिक बढ़ जाती है | जो लोग बेकारी के कारण या अन्य किसी भ्रम में आकर असामाजिक गतिविधियों में लिप्त होते हैं या अराष्ट्रवादी ताक़तों का साथ देते हैं | ऐसा होने से रोकने में मैयरा पायिबी की भूमिका निश्चित रूप से कारगर हो जाती है | भावी पीढ़ी अनैतिक - अरष्ट्रावादी पथ की ओर ना जाकर अपने परिवार-ग्राम-देश हित में स्वयंसेवा भाव से काम करे, इस हेतु वह जनमानस को तैयार करती है | अत: मणिपुर में मैयरा पायिबी का सामाजिक-सांस्कृतिक आयोजन वर्तमान के सन्दर्भों में अत्यधिक मायने रखता है | जबकि मणिपुर में पिछले लम्बे अरसे से अन्यान्य कारणों से अशांति का माहौल बना हुआ है |

11. क्या योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों में ऐसा कुछ है जिसे प्रतिपादित अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार के मानकों के प्रतिकूल माना जा सकता है या फिर जिसे समुदाय, समूह या फिट व्यक्ति के आपसी सम्मान को ठेस पहुँचती हो या फिर वे उनके स्थाई विकास को बाधित करते हों. क्या प्रस्तावित योजना के तहत या फिर सांस्कृतिक परम्परा में ऐसा कुछ है जो देश के कानून या फिर उनसे जुड़े समुदाय के समन्वय को या दूसरों को क्षति पहुंचाती हो ? विवाद खड़ा करती हो ?

<u>उत्तर-</u> योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक परम्परा के विषय में ऐसा कुछ नहीं है जिसे प्रतिपादित अंतरराष्ट्रीय मानव अधिकार के मानकों के प्रतिकूल माना जा सकता है बल्कि यह परम्परा समाज को सही दिशा देने में महत्वपूर्ण रूप से सहायक सिद्ध होती है |

12. प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा की योजना क्या उससे सम्बंधित संवाद के लिए पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करती है ?

<u>उत्तर-</u> हाँ, प्रस्तावित सांस्कृतिक परम्परा की योजना उससे सम्बंधित संवाद के लिए पारदर्शिता, सजगता और प्रोत्साहन को सुनिश्चित करती है |

13. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण के लिए उठाए जाने वाले उपायों/क़दमों/प्रयासों के बारे जानकारी, जो उसको संरक्षित या संवर्धित कर सकते हैं.

<u>उत्तर-</u> उल्लेखित उपाय/उपायों को पहचान कर चिन्हित करें जिसे वर्तमान में सम्बंधित समुदायों, समूहों, और व्यक्तियों द्वारा अपनाया जाता है |

1. प्रशिक्षण कार्यक्रम (संचरण)
2. संगोष्ठी (ग्राम, जिला एवं प्रदेश स्तर पर)
3. सामाजिक-सांस्कृतिक जागरूकता अभियान
4. मैयरा पायिबी स्थापना दिवस आयोजन (सभी मैयरा पायिबी समूहों का सामूहिक)
5. वार्षिक मिलन कार्यक्रम (प्रत्येक मैयरा पायिबी संगठन द्वारा)
6. सभी मैयरा पायिबी (पंजीकृत अथवा गैर पंजीकृत) संगठनों का विशाल सम्मलेन
7. रैली (लेकाई तथा ग्राम स्तर पर)
8. सेमीनार (ऐसे सेमिनार जिसमें अन्य लोग भी शामिल हो सकें)
9. परम्परा का उसके मूल स्वरूप में संरक्षण एवं संवर्धन

14. स्थानीय, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण के लिए अधिकारियों ने क्या उपाय किये ? उनका विवरण दें |

<u>उत्तर-</u> योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक परम्परा के तत्वों के संरक्षण के लिए स्थानीय, राज्य अथवा राष्ट्रीय स्तर पर अधिकारियों द्वारा कोई विशेष उपाय हेतु प्रयास नहीं किये गये हैं | अपितु मैयरा पायिबी का कार्य क्षेत्र सम्पूर्ण मणिपुर है फिर भी सरकारी स्तर पर इस परम्परा की गतिविधियों में सामाजिक-सांस्कृतिक विकास के आधारभूत तत्वों को फिर से पुनर्जीवित करने के सामूहिक प्रयासों का इतिहास नगण्य ही है |

15. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के व्यवहार, जीवन्तता और भविष्य को क्या खतरे हैं ? वर्तमान परिदृश्य के उपलब्ध साक्ष्यों और सम्बंधित कारणों का व्योरा दें |

<u>उत्तर-</u> योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक परम्परा के तत्वों के व्यवहार, जीवंतता और भविष्य को खतरा है | हालाँकि मैयरा पायिबी का एक काम अन्याय और गलत व्यवहार के विरुद्ध आवाज़ उठाना है किन्तु साथ में सामाजिक विकास, जिसके लिए इस परम्परा का विकास हुआ, उस पर भी अपनी गतिविधियों को केंद्रित रखना आवश्यक है | अन्यथा वर्तमान परिस्थितियों को देखें तो मणिपुर में मैयरा पायिबी की गतिविधियाँ आज केवल सेना और सरकार के विरोध तक सीमित रह गयीं हैं | वर्तमान परिदृश्य के उपलब्ध साक्ष्यों और दिग्भ्रमित गतिविधियों एवं सम्बंधित कारणों से यह स्पष्ट है | शोध प्रलेखन में समाचार पत्र की प्रतियां वर्तमान परिदृश्य के साक्ष्य सम्बंधित सन्दर्भ रूप में संलग्न हैं|

16. संरक्षण के क्या उपाय अपनाने के सुझाव हैं ?

(इसमें उन उपायों के पहचान कर उनकी चर्चा करें जिससे के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण और संवर्धन को बढ़ावा मिल सके | ये उपाय ठोस हों जिसे भविष्य की सांस्कृतिक नीति के साथ आत्मसात किया जा सके ताकि प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों का राज्य स्तर पर संरक्षण किया जा सके |)

<u>उत्तर-</u> मैयरा पायिबी स्वयं में एक विचार है जिसके तहत सभी महिलाएं एकत्रित होती हैं | किन्तु समय के साथ हुए घटनाक्रमों में जो गतिविधियाँ अपना मूल स्वरूप खो चुकी हैं उसे पुन: स्थापित करने हेतु निम्न प्रयास किये जाने आवश्यक हैं -

1. मैयरा पायिबी विषय पर सभाएं, सेमिनार और अभियान |

2. मैयरा पायिबी जिस मूल सोच के साथ शुरू हुई उसको बढ़ावा |

3. मैयरा पायिबी की कोशिशों/प्रयासों में सकारात्मक रूप से तेज़ी लाना |

4. महिलाओं द्वारा युवा पीढ़ी को देशहित में प्रोत्साहित करने और उन्हें असामाजिक गतिविधियों में लिप्त ना होने देने के लिए कार्यक्रम |

5. सांस्कृतिक समन्वय कार्यक्रम |

6. सभी मैयरा पायिबी संगठनों को एकसूत्र में बाँधने के लिए कार्यक्रम |

इसके अतिरिक्त अन्य उपाय भी अपनाए जा सकते हैं |

17. सामुदायिक सहभागिता (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के संरक्षण की योजना में समुदाय, समूह, व्यक्ति की सहभागिता के बारे में लिखें)

<u>उत्तर-</u> जहाँ तक इस सामाजिक परम्परा में सामुदायिक सहभागिता का प्रश्न है तो मणिपुर में मेतेई समाज की प्रत्येक विवाहित महिला मैयरा पायिबी है | मणिपुर में मैयरा पायिबी की दृष्टि से अपने उद्देश्य को बढ़ाने के लिए वैचारिक रूप से ये महिलाएं काफी सशक्त है |

18. सम्बंधित समुदाय के संघठन(नों) या प्रतिनिधि (यों) (प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों से जुड़ें हर समुदायिक संगठन या प्रतिनिधि या अन्य ग़ैर सरकारी संस्था जैसे की एसोसिएशन, आर्गेनाइजेशन, क्लब, गिल्ड, सलाहकार समिति, स्टीयरिंग समिति आदि)

<u>उत्तर-</u>

1. संस्था /कम्पनी/ हस्ती का नाम-

   सागोलसेम खोम्दोम्बी देवी

2. सम्बंधित/ अधिकारी व्यक्ति का नाम पदनाम व संपर्क-

मैयरा पायिबी, "बामोनकाम्पु वीमेन वेलफेयर एसोसिएशन"

3. पता- **पैलेस कंपाउंड, भाग्यचन्द्र ओपन एयर थिएटर के सामने, इम्फाल पश्चिम, मणिपुर,**
4. फोन नंबर : मोबाइल न. : **9612157546**
5. ईमेल :
6. अन्य सम्बंधित जानकारी :-

सागोलसेम खोम्दोम्बी देवी, लेकाई स्तरीय मैयरा पायिबी समूह की सदस्या हैं |

19. किसी मौजूदा इन्वेंटरी, डेटाबेस या डाटा क्रिएशन सेंटर (स्थानीय / राज्यकीय / राष्ट्रीय) की जानकारी जिसका आपको पता हो या आप किसी कार्यालय, एजेंसी, आर्गेनाईजेशन या व्यक्ति की जानकारी को इस तरह की सूची को संभल कर रखता हो उसकी जानकारी दें |

<u>उत्तर-</u> इस सन्दर्भ में इस प्रकार की कोई लाइब्रेरी या डाटा क्रिएशन सेंटर अभी तक विकसित नहीं किया गया है | हालांकि इस परम्परा से सम्बंधित कई संस्थाएं निजी तौर पर इस प्रकार का प्रयास करती हैं | कुछ संस्थाओं का विवरण प्रश्न क्रमांक 4 तथा 18 के उत्तर में दिया गया है |

20. योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों से संबंधित प्रमुख प्रकाशित संदर्भ सूची या दस्तावेज़ (किताब, लेख, ऑडियो-विजुअल सामग्री, लाइब्रेरी, म्यूजियम, प्राइवेट सहृदयों संग्राहकों, कलाकारों / व्यक्तियों के नाम और पते तथा वेबसाइट आदि) जो सम्बंधित सांस्कृतिक विरासत / परम्परा के तत्त्वों के बारे में हों |

<u>उत्तर-</u> मणिपुर विश्वविद्यालय से पीएचडी की एक स्कॉलर द्वारा इस विषय पर पीएचडी थीसिस "Women's grassroots movements highlighting the Naga Mothers as well as the Meira Paibi in Manipur" (शोध) लिखा गया है | जिसका संकलन मणिपुर विश्वविद्यालय के पुस्तकालय में मौजूद है |

इसके अतिरिक्त संयुक्त राष्ट्र के संयुक्त प्रयास से डाटा संकलन कराया गया है, इसे पुस्तक रूप में प्रकाशित करवाया गया है | जिसमें विषय से सम्बंधित कई प्रकार के डाटा दिए गए हैं | यह पुस्तक है - MANIPUR: PERILS OF WAR AND WOMANHOOD- By: The Civil Society Coalition on Human Rights in Manipur and the UN.

हस्ताक्षर .....

नाम व पदनाम- गुलशन

संस्थान का नाम .....
(यदि है तो)

पता :- पी ब्लाक, गली संख्या 6
गृह संख्या- 101-102
मंगोल पुरी, नई दिल्ली-110083
फोन न. .....

मोबाइल :- 8285304087

ईमेल :- gpreit07@gmail.com

वेबसाइट .....

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार अधीनस्थ संगीत नाटक अकादमी के अंतर्गत

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत 2015-16 के निमित्त

मैयरा पायिबी : मणिपुर की सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा का प्रलेखन

अनुक्रमणिक

विषय	पृष्ठ क्रमांक
1. परियोजना खाका (ब्लूप्रिंट)	i-iii
2. शोध सार एवं महत्व	1-2
3. विषय प्रवेश-	3
4. मैयरा पायिबी एक परिचय	3
5. मैयरा पायिबी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि	4
6. लाल्लुप काबा से शुरुआत	5
7. महिलाओं का आर्थिक स्वावलंबन	6
8. मणिपुर में महिलाओं का अहिंसात्मक विरोध प्रदर्शन	7
9. नूपीलान : 1904 और 1939-	7
10. निशाबंदी और समाज सुधार-	8
11. निशाबंदी से मैयरा पायिबी : विकासयात्रा में नाम परिवर्तन-	10
12. गृहणी से मैयरा पायिबी बनने तक का सफ़र-	11
13. मैयरा पायिबी के कार्य की दिशा में बदलाव-	11

14. अफ्स्पा अधिनियम 1958 और मैयरा पायिबी की गतिविधियाँ- 12

15. सैन्य ताकतों का विरोध और मैयरा पायिबी संगठनों का निर्माण- 14

16. मैयरा पायिबी का कार्य एवं उसकी स्वीकार्यता- 15

17. मैयरा पायिबी के उद्देश्य और कार्य पद्धति- 15

18. मैयरा पायिबी की सांगठनिक व्यवस्था एवं फैलाव- 16

19. मैयरा पायिबी की वर्तमान ध्वजवाहक- 17

20. मैयरा पायिबी समाज की संचार व्यवस्था- 18

21. राजनीतिक दृष्टि से मैयरा पायिबी की महत्ता- 19

22. उल्लेखनीय कार्य का पुरस्कार- 19

23. मैयरा पायिबी की संगठनात्मक शक्ति- 20

24. मैयरा पायिबी की संगठनात्मक संरचना- 20

25. मैयरा पायिबी संगठन का कार्यक्षेत्र- 21

26. प्रमुख मैयरा पायिबी संगठन- 21

27. मैयरा पायिबी के विरोध का स्तर और अहिंसात्मक व्यवहार- 22

28. मैयरा पायिबी की सरकार से अपेक्षा- 24

29. निष्कर्ष- 25

30. फोटो- 26-27

31. सुर्ख़ियों में मैयरा पायिबी- 28-36

32. सन्दर्भ सूची- 37-38

BLUEPRINT OF THE ICH 2015-16 PROJECT- MEIRA PAIBI

ICH-2015-16 के अंतर्गत परियोजना मैयरा पायिबी की मूल योजना

[File No. 28-6/ICH-Scheme/2015-16/30
21/04/2016]

1. परियोजना से सम्बंधित संक्षिप्त परिचय

मैयरा पायिबी मणिपुर समाज में स्थापित एक सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा है, जिसका नेतृत्व मेतेई महिलायें करती हैं | मैयरा का अर्थ है- मशाल तथा पायिबी का अर्थ है उस मशाल को धारण करने वाली महिला | जलती मशाल धारण की हुई महिला को मणिपुरी भाषा में मैयरा पायिबी कहा गया है |

मैयरा पायिबी द्वारा यह सभी प्रयास वास्तव में सामाजिक-सांस्कृतिक शुचिता बनाये रखने के लिए ही किये गए, जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका मेतेई महिलाओं ने निभाई | महिलाओं के विरोध का तरीका नितांत अहिंसात्मक और शान्तिपूर्ण होता है | घर में पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाने से लेकर मैयरा पायिबी बनने तक की एक लम्बी यात्रा और अनूठे प्रयासों, विफलताओं-सफलताओं तथा आज इसके मूल स्वरूप में आते बदलाव की वृहद् यात्रा को शोध प्रलेखन में लिखा गया है |

2. शोध कार्य के उद्देश्य :

1. मैयरा पायिबी परम्परा के मूल रूप को संजोना, प्रलेखित करना तथा दर्शाना |
2. इस सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा में घटनाओंवश हुए बदलावों के कारण उसके वर्तमान रूप का वर्णन करना |
3. मूल विचार की जीवंतता की दृष्टि से, महत्वपूर्ण प्रयासों से फलित इस परम्परा को उसके मूल रूप में ही आगे बढ़ाने का प्रयास करना |
4. मैयरा पायिबी विषय को मणिपुर के बाहर भी विचार के रूप में समाज तक पहुँचाना |

3. परियोजना का क्रियान्वयन :

परियोजना को पूरा करने के लिए क्रियान्वयन में निम्नलिखित चरण अपनाये जा रहे हैं :-

1. शोध कार्य
2. साहित्य अध्ययन एवं समीक्षा
3. साक्षात्कार
4. शोध प्रलेखन
5. साक्षात्कार आधारित लघु वृत्तिचत्र निर्माण

4. **परियोजना की समयावधि :**

परियोजना कार्य पूर्ण करने हेतु एक वर्ष की समयावधि |

5. **परियोजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्वों /की जीवंतता का विस्तारित भोगोलिक क्षेत्र सम्बंधित अन्य तथा परियोजना से (आदि महादेश ,देश ,राज्य ,प्रदेश ,ग्राम) सम्बंधित जानकारी**

वर्तमान में मणिपुर प्रदेश में कुल 9 जिले हैं | योजना के प्रस्तावित सांस्कृतिक विरासत परम्परा के तत्वों की जीवन्तता का विस्तृत भौगोलिक क्षेत्र मणिपुर घाटी क्षेत्र के मेतेई बहुल चार जिले शामिल हैं - पूर्वी इम्फाल, पश्चिमी इम्फाल, थोउबाल और बिष्णुपुर |

6. **आपके अनुसार परियोजना का निष्कर्ष**

शराब मुक्त मणिपुर बनाने में मुख्य भूमिका निभाने के कारण इन्हें निशाबंदी भी कहा जाता था और फिर जब इनके कार्य का दायरा बढ़ा तो यही महिलाएं मैयरा पायिबी के नाम से पहचानी जाने लगीं | लेकिन हर परिवर्तन में कार्य का हेतु समाज और राष्ट्र निर्माण की भावना ही रही और कार्य करने का अहिंसात्मक तरीका मेतेई संस्कृति की ही देन है | आज उस सोच का स्वरुप जरूर बदल गया है लेकिन इसे उसकी मूल सोच में जीवित रखने की आवश्यकता है क्योंकि महिलाएं ही वह एक सूत्रमय शक्ति हैं जिसके कारण परिवार, घर समाज और राष्ट्र एकता के सूत्र में बंध सकता है |

7. **परियोजना से सम्बंधित फोटो (प्राथमिक स्तरीय)**

अन्य चित्र शोध प्रलेखन प्रथम वृत्त में संलग्न |

थोकचोम रमानी देवी
मैयरा पायिबी समाज की सबसे वरिष्ठ नेतृत्व में से एक |

सचिव, आल मणिपुर वीमेन'स रिफोर्मेशन एंड डेवलपमेंट समाज (नूपी समाज)

File No. 28-6/ICH-Scheme/2015-16/30
21/04/2016

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार अधीनस्थ

संगीत नाटक अकादमी के अंतर्गत

अमूर्त सांस्कृतिक विरासत 2015-16 के निमित्त

मैयरा पायिबी : मणिपुर की सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा

का प्रलेखन

दूसरी एवं निर्णायक रिपोर्ट

विशेषज्ञों के साक्षात्कार एवं वृत्तचित्र

पहली रिपोर्ट के विषय में

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार अधीनस्थ संगीत नाटक अकादमी के अंतर्गत अमूर्त सांस्कृतिक विरासत 2015-16 के निमित्त **'मैयरा पायिबी : मणिपुर की सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा'** के सम्बन्ध में यह रिपोर्ट का दूसरा एवं निर्णायक भाग है |

रिपोर्ट के पहले भाग में – हमने शोध के माध्यम से मैयरा पायिबी परम्परा के मूल रूप को जानने और लिपिबद्ध करने का प्रयास किया | साथ ही इस सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा के इतिहास में घटनाओंवश हुए बदलावों के कारण उसके वर्तमान रूप का क्रमवार वर्णन भी प्रस्तुत किया |

उल्लेखनीय है कि मैयरा पायिबी के सभी प्रयास वास्तव में सामाजिक-सांस्कृतिक शुचिता बनाये रखने के लिए ही किये जाते हैं, जिसमें महत्वपूर्ण भूमिका मेतेई महिलाओं की होती है | अन्याय के विरुद्ध मैयरा पाईबी के विरोध का तरीका नितांत अहिंसात्मक और शान्तिपूर्ण होता है | घर में पारिवारिक जिम्मेदारियां निभाने से लेकर मैयरा पायिबी बनने तक की एक लम्बी यात्रा और अनूठे प्रयासों, विफलताओं-सफलताओं तथा आज इसके मूल स्वरूप में आते बदलाव की वृहद् विवरण का उल्लेख शोध प्रलेखन रिपोर्ट के पहले भाग में किया गया है |

रिपोर्ट के प्रथम भाग में मैयरा पाईबी का परिचय, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उद्देश्य एवं कार्यपद्धति, कार्यक्षेत्र, सांगठनिक व्यवस्था एवं संचार व्यवस्था, संगठनों एवं गतिविधियों का विवरण, आर्थिक स्वावलम्बन एवं प्रबन्धन, संगठनात्मक शक्ति एवं संरचना, प्रमुख मैयरा पाईबी सन्गठन तथा वर्तमान सक्रिय नेतृत्व एवं अहिंसात्मक व्यवहार शैली का विस्तृत तथ्यात्मक विवरण प्रस्तुत किया गया है |

रिपोर्ट के दूसरे भाग में शोधकर्ता द्वारा लिए गये साक्षात्कार में मणिपुर में मैयरा पाईबी की नेतृत्वकर्ताओं और विशेषज्ञों के द्वारा व्यक्त विचारों का विस्तृत विवरण प्रस्तुत है | जो शोध को और अधिक पुष्टता, दृढ़ता एवं वैधता प्रदान करता है | साथ ही अनुमति प्राप्त कर किये गये साक्षात्कार के विडियो रिकॉर्डिंग द्वारा निर्मित एक लघु वृत्तचित्र भी दूसरे व निर्णायक रिपोर्ट का भाग है | जो कि एक डी.वी.डी (DVD) में उपलब्ध कराया गया है | वृत्तचित्र संबंधित डी.वी.डी (DVD) रिपोर्ट के साथ संलग्न है |

उक्त ICH परियोजना कार्य (2015-2016) हेतु अकादमी से सहायतार्थ प्राप्त राशि का उपयोगिता प्रमाणपत्र भी निर्णायक रिपोर्ट के साथ संलग्न किया गया है |

रिपोर्ट का दूसरा व निर्णायक भाग

भवन, मकबरे, इमारतें, किले और मीनारें ये सब मूर्त धरोहरों की साकार रूप हैं | कोई जाकर इन्हें देख सकता है, छू सकता है, इनकी सैर कर सकता है | लेकिन इस विश्व की विभिन्न संस्कृतियों में अलग-अलग समय पर कई ऐसे प्रयास हुए हैं जिनके आकार की कोई परिधि नहीं, जिनकी पहचान उजागर नहीं किन्तु उन अमूर्त सांस्कृतिक विरासतों और परम्पराओं का प्रसार-प्रभाव अमिट और व्यापक है | ऐसी ही अमूर्त सांस्कृतिक विरासत का एक उदहारण भारत के मणिपुर प्रान्त में ***'मैयरा पाईबी'*** है | मणिपुर की मातृशक्ति द्वारा महिलाओं के सशक्तिकरण के साथ-साथ भावी पीढ़ियों को संस्कृतिवान बनाने का कार्य भी यही नारीशक्ति *मैयरा पाईबी* बनकर करती हैं | मैयरा पाईबी किसी एक समूह या व्यक्ति का नाम नहीं अपितु यह एक विचार है जिसके मूल में मणिपुर की सांस्कृतिक गुण और पारम्परिक विरासत का बीज है | मेतेई (मणिपुरी) भाषा में मशाल को मैयरा कहा जाता है और समाज को कठिनाइयों, अनावश्यक उपद्रवों एवं असामाजिक तत्वों से बचाने के लिए आगे आने वाली महिला जो इस बांस की बनी मशाल को धारण करती है उसे ही मैयरा पाईबी कहते हैं | मैयरा पाईबी का एक उद्देश्य समाज की दिग्भ्रमित हुई नयी पीढ़ी को पुन: मुख्यधारा में लाकर समाजोत्थान का कार्य करना है | इसमें शामिल सभी महिलाएं अपने समाज की रक्षा के लिए ही पूरी तत्परता से अपने इस उत्तरदायित्व का निर्वहन करती हैं |

नेतृत्व और संचालन मणिपुरी महिलाएं के हाथों में ही रहता है | जिसमें पुरुष वर्ग की भूमिका गौण है | मणिपुर में आवश्यक रूप से प्रत्येक महिला जो विवाहित है वह मैयरा पाईबी है | यह प्रबंध समाज में परम्परागत रूप से ही हो गया है | मैयरा पाईबी बनने के लिए किसी को बाध्य नहीं किया जाता | प्रत्येक महिला अपने समाज के हित में मैयरा पाईबी बनना स्वीकार करती है और अवसर आने पर मशाल हाथ में लेकर घर के बाहर

निकलकर अन्याय के विरुद्ध लड़ने के लिए समाज का नेतृत्व भी करती है | नुपिलान से लेकर निशाबंदी और अब मैयरा पायिबी, अपनी सैकड़ों वर्षों की यात्रा में कई सतत समाज सुधार के कठिन प्रयासों और सकारात्मक परिणामों की थाती अपने पक्ष में लिए मणिपुर की सर्वस्वीकार्य विरासत है, जो स्वत: ही प्रत्येक नारी अपनाती जाती है |

अपने मूल विचार के साथ प्रारंभ हुई यह परंपरा अपनी लम्बी यात्रा में कई कठिन पड़ावों से गुजरी जिसमें इसकी मूल भावना को भी कई बार राजनीतिक रूप देने के असफल प्रयास किये गये | मैयरा पायिबी समाज की नकारात्मक छवि प्रस्तुत करने, असामाजिक गतिविधियों से जोड़ने का असफल प्रयास भी किया गया | किन्तु मणिपुर की मशालधारी महिलाओं ने सांस्कृतिक विरासत के बीज से उपजे अपने अभियान को असामाजिक तत्वों के प्रभाव से बचाने का सामर्थ्यवान प्रयास किया | समाज सुधार और प्रगितशील समाज निर्माण का यह अनोखा प्रयास आज भी सतत जारी है |

हमने अपने शोध कार्य के निमित्त मणिपुर की लेकाई (मोहल्ले) स्तर से लेकर राज्य स्तर तक की मैयरा पाईबी समाज के विभिन्न नेतृत्वकर्ताओं से बातचीत की | जिसमें पहले निशाबन्दी और आज मैयरा पाईबी समाज की सर्वाधिक अनुभवी ध्वजवाहिका 86 वर्षीय इमा (माँ) थोकचोम रमानी देवी और इमा फौजेन्बम सखी लैयमा सहित लेकाई स्तरीय समूह बामोनकाम्पू की महासचिव सागोलसेम खोम्दोम्बी देवी, मणिपुर विश्वविद्यालय की सेवानिवृत्त प्रोफेसर श्रीमती क्षेत्रीमयूम बिमोला देवी, कलाक्षेत्र से लायमयूम खुलना, गुरुमयुम बिसेश्वर शर्मा तथा मणिपुर में एक गाँधीवादी संस्थान की प्रमुख सुश्री ओइनाम सरिता देवी शामिल हैं |

मैयरा पाईबी

मणिपुर की सामाजिक-सांस्कृतिक परम्परा

विशेषज्ञों के साक्षात्कार

विशेषज्ञों के साक्षात्कार

निर्णायक रिपोर्ट तैयार करने में मैयरा पाईबी समाज की प्रमुख नेतृत्वकर्ताओं, वरिष्ठ प्रतिनिधियों एवं सम्बन्धित विशेषज्ञों से जानकारी एकत्रित की है | इस संबंध में निम्नलिखित प्रमुख एवं वरिष्ठ मैयरा पाईबी नेतृत्वकर्ताओं एवं विशेषज्ञों के साक्षात्कार लिए गये हैं |

साक्षात्कार देने वालों का परिचय

1. **सगोल्शेम खोम्दोम्बी देवी–** महामंत्री (General Secretary), बमोनकाम्पु वीमेन वेलफेयर एसोसिएशन, इम्फाल पूर्व, मणिपुर
2. **थोकचोम रमानी देवी-** संस्थापक एवं वर्तमान अध्यक्ष, आल मणिपुर वीमेन सोशल रिफार्मेशन एंड डेवलपमेंट समाज (नुपी समाज)
3. **फौजेम्बम सखी लैयमा-** अध्यक्ष, अपुन्बा मणिपुर कन्बा इमा लुप (Apunba Manipur Kanba Ima Lup), मणिपुर
4. **प्रोफ़ेसर क्षेत्रीमयूम बिमोला देवी-** प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान मणिपुर विश्वविद्यालय
5. **ओइनाम सरिता देवी-** संस्थापक एवं सचिव, कस्तूरबा गाँधी इंस्टिट्यूट फ़ोर डेवलपमेंट, इम्फाल, मणिपुर
6. **लायमयूम खुलना देवी-** सामाजिक कार्यकर्ता एवं कोरियोग्राफर (मणिपुर डांस), दिल्ली

साक्षात्कार की उपयुक्त प्रक्रिया में प्रश्नों के माध्यम से मैयरा पाईबी के विषय में महत्वपूर्ण विभिन्न जिज्ञासाओं पर उल्लिखित विशेषज्ञों से हुई बातचीत का विस्तृत उल्लेख विस्तृत रूप से आगे प्रस्तुत है |

प्रश्न- मैयरा पाईबी को समझने के लिए सबसे सरल व्याख्या क्या है ?

सागोलसेम खोम्दोम्बी देवी कहती हैं कि मैयरा पाईबी सामाजिक-सांस्कृतिक विरासत की विकासयात्रा में केवल नाम परिवर्तन है | पुराने समय की नुपिलान जो राज्यजनित अन्याय के खिलाफ लड़ी और फिर निशाबन्दी के रूप में जो शराब को प्रतिबंधित कराने का काम करती थीं वे ही आज की मैयरा पाईबी हैं | क्यूंकि भाव तो मिटटी से जुड़ा हुआ है, बस पीढियां बदली हैं लेकिन महिलाएं पीढ़ी-दर-पीढ़ी अपने उत्तरदायित्व का निर्वहन सदैव से कर रही हैं | मणिपुर की बदलती परिस्थितियों और बिगड़ते हालातों का निर्णय था जहाँ से मैयरा पाईबी उदित हुई | जो उसी परम्परा का हिस्सा है | समाज को उर्ध्वगामी बनाना, भावी पीढ़ी के उत्थान के लिए कार्य करना, किसी भी प्रकार के अन्याय को न सहना, यह भाव हमारे संस्कृति में हैं इसी से मैयरा पाईबी का विचार उत्पन्न हुआ |

खोम्दोम्बी देवी बताती हैं कि सभी महिलाएं अपने घर से बांस का टुकडा लेकर और उसमें ऊपर से मिट्टी के तेल (केरोसिन) में सना कपड़ा लगाकर एक मशाल बनाती थीं | मणिपुर में इसी मशाल को मैयरा कहते हैं और इस मशाल को धारण करने वाली महिला को मैयरा पायिबी कहते हैं | यहीं से मैयरा पायिबी अवधारणा का जन्म हुआ | लेकिन इस परिवर्तन से उनकी गतिविधियों में कोई अंतर नहीं आया बल्कि कार्यक्षेत्र बढ़ गया | जो प्रयास पहले दिन के समय तक सीमित थे, सामाजिक सुरक्षा की दृष्टि से अब रात में भी ये महिलाएं मशाल लेकर घर से बाहर निकलने लगीं, साथ में अन्य महिलाओं को भी एकत्रित करती थीं | इस गश्त के दौरान यदि कोई व्यक्ति शराब पिए, उत्पात मचाते हुए या घर में क्लेश करते हुए पाया जाता था तो इन महिलाओं द्वारा दण्डित किया जाता था, साथ ही सार्वजनिक रूप से उसकी निंदा की जाती थी ताकि भविष्य में वह ऐसा न करे | इस प्रकार मैयरा पायिबी की शुरुआत हुई | ये वास्तव में वही व्यवस्था है जो 18वीं शताब्दी से पहले भी विद्यमान थी |

86 वर्षीया इमा रमानी कहती हैं कि हमने शराब बंद कराने के लिए भी कई प्रयास किये | मैं स्वयं मशाल लेकर और अपने पड़ोस की महिलाओं को साथ लेकर गाँव-गाँव घूमी हूँ ये देखने के लिए कि कहीं हमारे गाँव का कोई व्यक्ति गाँव के बाहर कोई अनुचित काम (शराब-जुआ-लड़ाई-झगड़ा) में लिप्त तो नहीं | वे कहती हैं कि शराब के सेवन ने मणिपुर की युवा पीढ़ी को नशे का आदि बना दिया है | जिसके कारण आज का युवा कुछ अच्छा करने के बजाये वह अपनी पारिवारिक एवं सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति निष्क्रिय होकर असामाजिक गतिविधियों में लिप्त होने की ओर अग्रसर है |

इमा सखी लैयमा कहती हैं कि हमारे समाज में किसी के सामने हाथ फैला कर मांगना बहुत बड़ा पाप समझा जाता है | ऐसा करने में शर्मिदगी महसूस होती है | यहाँ तक कि मेतेई महिलाएं अपने पति से भी पैसे नहीं मांगतीं | वे स्वयं आर्थिक रूप से सम्पन्न बनने का प्रयास करती हैं | हमारा समाज स्वाभिमान के साथ ही बहुत संवेदनशील भी हैं ऐसे में हम किसी पर अन्याय और अत्याचार होते भी नहीं देख सकते | और न ही अपने समाज के नौजवानों को भ्रष्ट होते देख सकते हैं | मैयरा पाईबी अपने समाज को सांस्कृतिक एवं सामाजिक रूप से संरक्षित रखने का ही काम करती हैं |

इस तथ्य को अपने शोध के दौरान हमने सही पाया और पाया कि पूरे मणिपुर में एक भी शराब की दुकान नहीं है और शायद यही कारण है कि पूरे मणिपुर में एक भी व्यक्ति भिखारी नहीं है | यह किसी समाज के स्वाभिमान एवं आत्मनिर्भर होने का उल्लेखनीय उदाहण है |

ओइनाम सरिता देवी बताती हैं कि मैयरा पायिबी परम्परा की शुरुआत अपने घर-परिवार, गाँव-समाज और देश को सभ्य-सुसंस्कृत और सुरक्षित बनाये रखने और युवाओं को भटकने से बचाने के लिए हुई थी |

प्रश्न- मैयरा पाईबी का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

ओइनाम सरिता देवी बताती हैं कि मैयरा पाईबी का उद्देश्य राजनीतिक ना होकर सामजिक हित करना है | उनका यह प्रयास रहता है कि मणिपुर के घरों में घरेलू हिंसा ना हो | कोई अपने घर में महिलाओं या बच्चों या परिवार के सदस्यों के साथ झगड़ा ना करे | मैयरा पाईबी ने अपने हाथों में जो काम लिया है उसका उद्देश्य समाज में शांति बनाये रखना और यह सुनिश्चित करना है कि हमारे मोहल्ले का कोई भी व्यक्ति (महिला या पुरुष) किसी भी प्रकार के उपद्रव में शामिल ना हो, वह किसी असामाजिक गतिविधि में लिप्त ना हो, कोई भी अपने घर में परिवार के सदस्यों के साथ घरेलू हिंसा ना करे | इसीलिए सभी पाईबी (महिलाएं) शाम को अपने घरों का काम पूरा करके अँधेरा होते ही अपनी लेइकायी (गली) के बाहर मैयरा (मशाल) लेकर निकलती हैं और चारों दिशाओं में पैदल गश्त लगाती हैं | यह उपक्रम प्रत्येक लेइकायी की महिलायें स्वप्रेरणा से करती हैं | इस प्रकार यह पद्धति अमूर्त रूप से पूरे मणिपुर की संस्कृति में अनुसरणीय है |

इसके समर्थन में लायमयूम खुलना कहती हैं कि मणिपुर में समाज की उन्नति और भटकी युवा पीढ़ी को अपने पारिवारिक एवं सामाजिक उत्तरदायित्व निभाने के लिए कुशल बनाने हेतु एक प्रयास शुरू किया कि सभी शाम ढलने के बाद प्रत्येक गाँव-मोहल्ले की महिलाएं अपने हाथ में मशाल लेकर पूरे गाँव-मोहल्ले का निरिक्षण करती थीं, और यदि कोई शराब पीते, जुआ खेलते या झगड़ा करते पाया जाता तो उसे रोकने का प्रयास करती थीं | ऐसा भी हुआ है कि यदि उपद्रवी नहीं माने हैं तो उन्हें उचित दंड भी दिया गया है |

फनजोउबम ओन्गबी सखी लेयमा देवी कहती हैं कि लेकिन समय के साथ घटती घटनाओं ने कई बदलावों और व्यवधानों को जन्म दिया | 1980 में मणिपुर में अफ्स्पा (AFSPA-Armed Forces Special Power Act) लागू होने के बाद से इस सामाजिक-सांस्कृतिक

संगठन के संघर्ष का फलक और अधिक बढ़ गया था तथा स्वरुप भी बदल गया था | पहले ये महिलाएं केवल अपने समाज को सुधारने के उद्देश्य से बाहर निकलती थीं | जिसे हम निशाबंदी की संज्ञा देते हैं | लेकिन अब सेना एवं राज्यजनित अन्यायपूर्ण अत्याचार और प्रताड़ना के विरुद्ध भी ये महिलाएं एकजुट होने लगीं | जिसे आज मैयरा पाईबी के नाम से जानते हैं |

शोध में पता चलता है कि 1980 के बाद से ही मैयरा पायिबी परम्परा की संगठनात्मक रूप से शुरुआत होती है | इससे पहले यह परम्परा समाज के अन्दर व्यवहारिक रूप में विद्यमान थी, जिसका आवश्यकता पड़ने पर लोग पालन करते थे, आज कई पंजीकृत संगठन इसमें कार्यरत हैं | ये संगठन उन्हीं महिलाओं द्वारा बनाये गये हैं जो समाज सुधार के कार्य में पूर्व से ही सक्रिय थीं |

इमा रमानी कहती हैं कि ऐसा नहीं है कि पुरुष इस लडाई में हमारे साथ नहीं आ सकते यदि हम उन्हें कहेंगे तो वे साथ आ खड़े होंगे | आवश्यकता पड़ने पर वे हमारे साथ होते हैं, लेकिन महिलाएं ही इसमें आगे बढ़कर नेतृत्व करती हैं |

प्रश्न- नुपिलान से लेकर निशाबंदी और अब मैयरा पाईबी की यात्रा के बारे में बताएं | इनमें आपस में क्या सम्बन्ध है और इसमें समय के साथ क्या-क्या बदलाव आये हैं ?

हमारे यह पूछने पर कि क्या मैयरा पाईबी महिलाओं के द्वारा आयोजित हाल ही के समय की व्यवस्था है या इसकी मणिपुर में कुछ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है | इस पर इमा रमानी देवी ने कहा- मैयरा पायिबी परम्परा आज शुरू नहीं हुई | इसकी यात्रा बहुत लम्बी और सतत है | मणिपुर में महिलाएं प्रारंभ से ही समाज के हर क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं | महिलाओं ने ही नुपिलान किया, महिलाएं ही निशाबन्दी के लिए अग्रसर हुईं और आज महिलाएं ही मैयरा पाईबी की भूमिका में भी हैं |

प्रोफेसर क्षेत्रीमयूम बिमोला देवी कहती हैं कि नूपीलान की योद्धा, निशाबंदी की पैरोकार और आज मैयरा पायिबी ये एक ही हैं | समस्याओं के बदलते स्वरुप, उनसे निपटने की पद्धति और मणिपुर की महिलाओं के संघर्ष की विकास यात्रा में यह बदलाव आया है | नाम ही बदला है लेकिन उनकी पहचान वही है |

सागोलशेम खोम्दोम्बी देवी खुद इसका हिस्सा हैं | वे इम्फाल ईस्ट जिले की बमोनकाम्पु वीमेन वेलफेयर एसोसिएशन में महासचिव हैं | वे कहती हैं कि नुपिलान के बाद शुरू में तो अपने ही घर-गली-मोहल्ले और समाज के भटके हुए नौजवानों को बचाने के लिए निशाबन्दी का समूह बना | और आज इसका वर्तमान स्वरुप जो हम देखते हैं वह मैयरा पाईबी का है | इस प्रकार आज यह लगभग 200 वर्षों से भी अधिक पुरानी विरासत का पालन हम कर रहे हैं, जिसका नाम समय के अनुसार और उसके कार्य की पहचान के अनुसार बदल गया | लेकिन आज भी उसमें सहभागी होने वाली मणिपुर की महिलाएं ही हैं, जो लालटेन की जगह अब लम्बे बांस के टुकड़े से बनी मशाल लेकर अँधेरे में निकलती हैं |

बीनालक्ष्मी नेपरम ने अपने एक लेख में लिखा था कि पहले यही मैयरा पाईबी लोग निशाबन्दी कहलाती थीं | निशाबंदी के समय ये अपने हाथों में 'पोदोन' अर्थात लालटेन लेकर चलती थीं | रात के समय में अपने घरों से लालटेन लेकर निकली ये महिलाएं अपने इलाके के बाहरी हिस्सों में इसलिए घूमती थीं कि यदि कोई व्यक्ति निशा सेवन (मणिपुरी भाषा में शराब को निशा कहा जाता है) करते मिले तो उसे रोका जाए और निशा छोड़ने के लिए प्रेरित किया जाए | शराब में धुत्त या जुआ खेलता कोई व्यक्ति यदि मिलता तो उस हालत में ये महिलाएं उसे घर भी छोड़ कर आती थीं | अंततोगत्वा निशाबन्दी का उद्देश्य था मणिपुर में शराब को बंद कराना |

उपलब्ध साहित्य एवं ऐतिहासिक तथ्यों पर आधारित शोध बताता है कि मणिपुर की महिला 18वीं सदी के पहले से लाल्लुप काबा के समय से सशक्त है और अपने समाज को सांस्कृतिक एवं नैतिक रूप से समृद्ध करने का उत्तरदायित्व प्रारम्भ से ही निभा रही है | वह 20वीं सदी के शुरुआत के दशकों में नूपीलान की योद्धा भी है, 1930 के दशक के बाद वही महिलाएं निशाबंदी की भूमिकर का भी निर्वहन करती हैं और 1980 में समस्याओं का स्वरुप बदला तो उन्होंने मशाल धारण कर ली और आज वह मैयरा पायिबी के रूप में उसी प्रकार से अपना कर्तव्य निर्वहन कर रही है |

1970 के दशक के बाद घटी घटनाओं के बाद मैयरा पाईबी की छवि और अभियान में आये बदलाव का इतिहास बताते हुए खोम्दोम्बी देवी कहती हैं कि इसके पीछे उग्रवादियों को पकड़ने और अंडरग्राउंड के लोगों पर शिकंजा कसने के लिए सेना (AFSPA) के माध्यम से जो ऑपरेशन मणिपुर में चलाये जाते थे उसके कारण कई बार जबरदस्ती निर्दोष लोगों को भी सेना की कार्रवाई का शिकार होना पड़ता था |

मैयरा पायिबी की एक और बड़ी नेता फनजोउबम ओन्गबी सखी देवी कहती हैं कि “आज की परिस्थिति यह है कि रात में लोग केवल इस भय से नहीं सो पाते कि रात को आर्मी के लोग आकर दरवाज़े पर दस्तक देंगे | और हमारे बच्चों को उठा कर ले जायेंगे | उनकी (सेना की) क्रूरता की सीमायें नहीं होतीं | वे कहती हैं कि जब हम युवा अवस्था में थे तब सेना और पुलिस से हमें सुरक्षा और सौहार्द का वातावरण मिलता था | हम मानते हैं कि इसमें गलती केवल उनकी नहीं है | लेकिन आज वे हमसे गैरों की तरह व्यवहार करने लगे हैं | हमारा उनपर मातृत्व-सा स्नेह था | आज हमारा मातृत्व प्रेम भी उन पर से खत्म हो चुका है |

खोम्दोम्बी देवी बताती हैं कि AFSPA ने शुरू में (1980 में) जो ऑपरेशन चलाया उसे कोम्बिंग (Combing) ऑपरेशन के नाम से जानते हैं | यह ऑपरेशन अधिकतर रात के अँधेरे में अंजाम दिए जाते थे | जिसका लाभ उठाकर महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार भी होता था | सेना के लोग रात के अँधेरे में हमारे समाज के पुरुषों विशेषकर हमारे युवा बच्चों को संदेह होने के कारण उठा कर ले जाते थे और उन्हें शारीरिक रूप से बहुत प्रताड़ित करते थे |

वे आगे कहती हैं कि हम किसी के साथ बुरा बर्ताव करने के लिए या किसी को सजा देने के लिए एकजुट नहीं होते | बल्कि बुरे बर्ताव के विरुद्ध, अन्याय के विरोध के लिए, अपने नौजवानों को बचाने और समाज में शांति एवं सुरक्षा स्थापित करने के लिए हम महिलाओं ने मोर्चा सम्भाला और मशाल हाथ में लेकर सडकों पर निकल पड़ीं | समय के साथ-साथ फिर यही महिलाएं समाज में न्याय दिलाने का काम भी करने लगीं | जो एक प्रकार से पंचायत का ही स्वरुप है | मोहल्ले के झगड़े निपटाना, घरेलू हिंसा का समाधान करना आदि |

इमा रमानी कहती हैं कि 1980 में 29 दिसम्बर की सुबह आर्मी ने हमारे इलाके के एक नौजवान लोउरेम्बम इबोमचा को हेईरांगोइथोंग माइबम लेईकाई (इलाके) में बम रखने के शक में घर से उठा लिया था | और मणिपुर यूनिवर्सिटी के नजदीक लंगथाबल आर्मी बेस कैम्प में ले गये थे | और उसे इतनी शारीरिक प्रताड़ना दी गयी थी कि वह अपने पैरों पर खड़ा भी नहीं हो पा रहा था | हम उसे साइकिल पर बैठाकर घर तक लेकर आये थे |

आर्मी के लोगों ने इबोमचा पर शक करने और हिरासत में लेने का कारण बताया कि जब हम तलाशी कर रहे थे तो हमें इबोमचा के जूते कीचड़ में सने हुए मिले | इमा रमानी कहती हैं कि केवल जूते गीले होने के शक में किसी को उसके घर से उठा लाना और जान जाने की हद तक मारना यह किस दृष्टि से समाज के नागरिकों के प्रति न्याय है | हम जानते थे कि आर्मी जिस व्यक्ति को संदेह के कारण पकड़ कर लायी है वह बम लगाने में किसी प्रकार दोषी नहीं है | इसीलिए हमने आर्मी के खिलाफ लामबंद होने का निर्णय लिया |

आगे इमा रमानी बताती हैं कि जब हमने इबोमचा को छुडाने के लिए अपनी लेइकाई (मोहल्ले) से मार्च शुरू किया था तो हमारे साथ सैकड़ों लोग शामिल थे | लेकिन जब हम आर्मी बेस कैम्प पहुंचे तो हमारी संख्या 50 से भी कम रह गयी थी | मैं और मेरे साथ दो और महिलाएं इमा मोमोन और इमा चोउबी साथ थीं | जब हम दृढ़ता से डटे रहे तब आर्मी ने हम में से केवल दो लोगों को ही कैम्प में अंदर आने की अनुमति दी | इमा मोमोन हिन्दी जानती थीं | तब मैं और इमा मोमोन अंदर गये थे | अंदर जाने पर बताया कि आर्मी की कोई मीटिंग चल रही है इसीलिए कुछ देर बाद में आना | हमें दो बजे तक इंतजार करना पड़ा | लेकिन हम वहीँ खड़े इंतजार करते रहे क्यूंकि हमारे युवा में हमारा विश्वास दृढ था कि लोउरेम्बम इबोमचा पूर्णतया निर्दोष है |

इमा थोकचोम रमानी कहती हैं कि हमारा संघर्ष आर्मी से नहीं है | बल्कि उन गलत और अशांत वातावरण के खिलाफ है जो मणिपुर की प्रगति में बाधक है |

यह घटना मैयरा पाईबी के इतिहास में कड़वा अनुभव लेकर आई | जिसने निशाबंदी को मैयरा पाईबी बनाया | समाज के हित में नई पीढ़ी को सकारात्मक दिशा देने और किसी भी प्रकार के अन्याय के विरुद्ध अहिंसात्मक दृष्टिकोण से अपनी लड़ाई लड़ने के लिए मणिपुर की महिलाओं ने स्वयं को और अधिक मजबूत किया और संगठित किया | इमा रमानी ने बताया कि वे लेइकायी-लेइकायी (प्रत्येक मोहल्ले) की महिलाओं को इकठ्ठा कर रात के अँधेरे में मैयरा (मशाल) हाथ में लेकर गली-गली घूमती थीं और यह प्रत्येक दिन का क्रम था |

प्रश्न- मैयरा पाईबी के इतिहास में <u>निशाबन्दी</u> का समय काल बहुत महत्वपूर्ण है | इस यात्रा में निशाबन्दी का क्या महत्व है ?

प्रोफेसर बिमोला देवी बताती हैं कि मणिपुर में 1904 और 1939 में अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ दो ऐतिहासिक लड़ाइयों में मेतेई महिलाओं की भागीदारी निर्णायक और प्रभावी थी | लेकिन निशाबन्दी की प्रथा ने मणिपुर में महिलाओं को एक अलग पहचान और विशेष दर्जा दिलाया | सन 1960 के दशक के बाद निशाबंदी पूरे राज्य में शराब बंद कराने के लिए अभियान चलाये हुए थीं | उनका कहना था कि राज्य में शराब बंद होनी चाहिए क्यूंकि इससे परिवार बिखर रहे हैं और हमारे नौजवान भटक रहे हैं | घरेलू हिंसा बहुत बढ़ गयी थी | और यह किसी एक घर में नहीं अपितु लगभग प्रत्येक गाँव-प्रत्येक घर का हाल था | शाम होते ही यह चलन बढ़ने लगता था | शराब बेचने वाले व्यापारी समृद्ध हो रहे थे और समाज कमजोर हो रहा था |

इमा रमानी कहती हैं कि मणिपुर में शराब नहीं होती | यहाँ निशाबंदी है लेकिन सरकारी सहयोग से नशा मणिपुर में प्रवेश कर गया है | हमारे यहाँ जो रिवाज है वह केवल स्थानीय जनजातियों में शुद्ध पारम्परिक तरीके से बनाई गयी निशा का ही प्रयोग किया जाता था जो कि स्वास्थ्य हेतु से प्रयोग होती थी | लेकिन बाहर से बनी रासायनिक शराब ने नौजवानों को भ्रष्ट कर दिया |

अत: इसी के विरोध में महिलाओं ने अभियान चलाया तथा जिन दुकानों में शराब बिकती थी उनके आगे बैठकर अहिंसक धरना-प्रदर्शन किये | ऐसा करने पर शराब व्यापारियों द्वारा उन्हें धमकियां भी मिलती थीं | पर वे अपने लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए विरोध पर दृढ़ता से डटी रहीं | जो व्यक्ति शराब पीता पाया जाता उसे शराब छोड़ने के लिए प्रेरित करतीं और भविष्य में दुबारा ऐसा ना करने की सलाह देतीं |

निशाबंदी के इन निरंतर प्रयासों का ही परिणाम था कि 1990 में मणिपुर को निशा रहित (Dry state) राज्य घोषित किया गया |

मणिपुर में थांग-ता के गुरु बिसेश्वर शर्मा कहते हैं कि मणिपुर में अपने गुरुओं और महिलाओं का बहुत सम्मान होता है पर ऐसा कहते हैं कि उस समय यहाँ उसकी उलट स्थिति थी | आज मैयरा पायिबी मणिपुर की प्रत्येक बस्ती-गली में मौजूद है | मणिपुर में मणिपुरी पुलिस पुरुषों के साथ दुर्व्यवहार कर सकती है लेकिन महिलाओं के साथ नहीं | मणिपुर में महिलाओं को यह सम्मान मैयरा पायिबी नामक शक्ति की ही देन है | नारी का सम्मान वापस लाने में मैयरा पाईबी का बहुत बड़ा योगदान है | बिसेश्वर शर्मा बताते हैं कि थांग-ता में भी हम आत्म रक्षा के साथ-साथ समाज की रक्षा करने के गुण सिखाते हैं और मैयरा पाईबी भी अपने समाज के लिए वही कार्य करती हैं |

ओइनाम सरिता देवी कहती हैं कि ऐसा नहीं है कि पहले महिलाओं का सम्मान नहीं था, किन्तु अब महिलाओं की क्षमता पर प्रश्न नहीं उठते | मणिपुर की महिलाएं उग्रवाद, गरीबी, बेरोज़गारी, शराब, सीमा सुरक्षा और प्रजाहित के प्रति राज्य की उदासीनता के खिलाफ़ कई दशकों से मोर्चा खोले हुए हैं | और अपनी बात रखने का तरीका हमेशा अहिंसात्मक ही रखा है |

प्रश्न- आज मैयरा पाईबी के बहुत सारे संगठन बन गये हैं | क्या ये सब अलग-अलग हैं या इनकी कोई एक Mother Organization भी है ?

खोम्दोम्बी देवी कहती हैं कि मैयरा पाईबी के लेकाई स्तरीय से लेकर राज्य स्तर के कई संगठन आज रजिस्टर्ड हैं | और बहुत सारे ऐसे भी संगठन हैं जो अपने-अपने स्तर पर काम कर रहे हैं लेकिन पंजीकृत नहीं हैं | इनका कोई Mother Organization नहीं है |

उनका कहना है कि मैयरा पायिबी के अंतर्गत गली-मोहल्ले (लेकाई) से लेकर प्रदेश स्तर तक जितने भी संगठन हैं वे पंजीकृत हों या ना हों लेकिन आपस में संगठित अवश्य हैं |

यह सही है कि आज कई सन्गठन बन गये हैं | लेकिन सभी का उद्देश्य एक ही है, क्यूंकि हम सभी एक ही परम्परा का भाग हैं | हम सभी एक साथ मिलकर समस्याओं का समाधान ढूंढने और समाज को आगे बढाने का काम करते हैं | और जब आवश्यकता होती है सभी समूह एकसाथ आ खड़े होते हैं | इससे कोई अंतर नहीं पड़ता कि कोई समूह रजिस्टर्ड है या नहीं है | या कोई महिला किसी रजिस्टर्ड मैयरा पाईबी समूह से जुड़ी है या नहीं | मैयरा पाईबी समूहों का रजिस्टर्ड होना या ना होना मैयरा पाईबी के अस्तित्व पर कोई प्रश्न चिन्ह नहीं लगाता |

प्रश्न- जो महिलाएं मैयरा पाईबी संगठनों में किसी दायित्व में नहीं हैं वे कैसी इसमें अपना योगदान देती हैं ?

खोम्दोम्बी देवी का कहना है कि मणिपुर की प्रत्येक महिला जो विवाहित है वह इस अभियान से जुड़ी है | इसके पीछे विचार यह है कि स्थायी तौर पर मैयरा पाईबी समूह में अधिकतर वे महिलाओं शामिल होती हैं जो विवाहित हैं | क्यूंकि विवाह होने के बाद महिलाएं अपने ससुराल चली जाती हैं अत: विवाह के बाद वे जिस लेकाई में जायेंगी वहां जाकर मैयरा पाईबी के संगठनों से जुड़ती हैं | लेकिन लायमयूम खुलना कहती हैं कि आज जो महिला जहाँ है (शादी से पहले और बाद में) वह वहीँ रहकर मैयरा पाईबी से जुड़ जाती है और उनके कार्यक्रमों में भाग लेती है |

प्रश्न- मैयरा पाईबी की कार्यपद्धति और काम करने का दायरा कितना बड़ा है | क्या मेतेई समाज के बाहर भी आप सक्रिय हैं ?

मैयरा पाईबी एक स्वप्रेरित, आत्मनिर्भर और न्यायप्रिय अहिंसावादी संगठन है | जो हमें हमारी संस्कृति से मिला है वही हमारी कार्यपद्धति में झलकता है | खोम्दोम्बी देवी कहती हैं कि यह परम्परा मेतेई समाज में शुरू हुई | लेकिन यहाँ किसी सम्प्रदायवाद या जातिवादी प्रथा को कोई स्थान नहीं है | परेशानी आने पर हम यह नहीं देखते कि वह हमारे समाज से सम्बन्धित है या नहीं | यहाँ सभी समुदायों में मैयरा पाईबी परिस्थिति एवं आवश्यकता अनुसार अपने-अपने इलाकों में सक्रिय रूप से काम करती हैं | और सभी समुदायों में मैयरा पाईबी की स्वीकार्यता भी है |

प्रश्न- समाज सुरक्षा के साथ-साथ महिलाओं की स्वयं की सुरक्षा का भी प्रश्न उठता है | इसके लिए आप क्या कदम उठाते हैं ?

AFSPA हटाना, और बाहर से आने वाली शराब पर रोक लगाना और ILP लागू करना हमारी प्रमुख मांग थी | इसके अभियान में कुल चार लोग मेरी साथी प्रमोदिनी सहित मारे गये थे | इमा रमानी देवी भावुकता से कहती हैं कि असामाजिक गतिविधियों के कारण हमारी आँखों के सामने हमारा घर-गाँव-समाज बर्बाद हो रहे थे | अँधेरा होते ही डर की अवस्था रहती थी | सेना की मणिपुर समाज के युवाओं के प्रति अप्रिय कार्रवाई के चलते और कभी-भी ऑपरेशन चलाने के डर से हम रात-रात भर सोते नहीं थे बल्कि महिलाएं अपनी-अपनी लेकाई में हाथों में मशाल लेकर रखवाली करती थीं | महिलाओं की सुरक्षा को लेकर मैयरा पाईबी ने सरकार के समक्ष भी आवाज उठाई | लेकिन बहुत कुछ सहायता नहीं मिली ऐसे में हम स्वयं ही एकजुट होती हैं |

ए.के. जानकी लेयमा ने अपने साक्षात्कार में बताया था कि हम ड्रग्स व्यसन, शराब और महिलाओं के प्रति अपराध के खिलाफ संघर्षरत हैं | हालाँकि मेतेई समाज पुरुष प्रधान समाज है फिर भी महिलाएं समाज में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं | मणिपुर में राजशाही के दौरान भी जब पुरुष युद्ध में बाहर जाते थे तो महिलाएं उनकी जगह लेती थीं, घर भी वही चलाती थीं, व्यापार भी वही संभालती थीं, पैसों का लेन-देन आदि सब महिलाओं के हाथों में ही रहता था |

इमा रमानी कहती हैं कि हम स्वयं अपनी सुरक्षा का भी जिम्मा उठाती हैं | मणिपुर की प्रत्येक महिला संकट के समय मैयरा पायिबी ही है | यही मैयरा पायिबी की मूल शक्ति है कि संकट के समय प्रत्येक महिला अपने उत्तरदायित्व को भली-भांति समझती है |

प्रश्न- मणिपुर में सामाजिक एवं सांस्कृतिक शुचिता बनाये रखने और संकट से उबरने के लिए मैयरा पाईबी सक्रिय है, यह कहना कितना सही है ?

इमा रमानी कहती हैं कि जो जनसंख्या बाहर से (मयांग) मणिपुर में प्रवेश करती हैं उसकी किसी प्रकार की जानकारी हमें नहीं रहती | जैसे वह किस प्रदेश का है, उसके माता-पिता कौन हैं, उसकी पहचान क्या है ? ऐसे में यदि उसके द्वारा या उसके साथ कुछ अप्रिय घटता है तो उसकी जिम्मेदारी कौन लेगा |

वे आगे कहती हैं कि ऐसे ही यदि जब राज्य (शासक) ही अपने नागरिकों के प्रति उदार और न्यायप्रिय न हो तो नागरिक किस दृष्टि से राज्य के प्रति अपनी सेवा देंगे | दोनों ही परिस्थितियों में मैयरा पाईबी अपनी भूमिका समाज हित में निभाती है | यह करने के लिए हमें किसी श्रेय, पुरस्कार अथवा पहचान की लालसा या आवश्यकता नहीं हैं |

इस प्रश्न पर इमा सखी देवी बहुत गम्भीरता से कहती हैं कि हमारे संस्कृति सम्पन्न मेतेई समाज में शराब पीना, जुआ खेलना या भीख मांगना बहुत ही बुरा माना जाता है | तो हम उपद्रव जैसी घटनाओं के विषय में तो सोच भी नहीं सकते | लेकिन बाहरी लोगों की भीड़ और आधुनिक बदलावों ने नई पीढ़ी के अंदर इन सभी दुर्गुणों को भर दिया है | अपने ही देश में हम अपने ही लोगों के लिए अपने दरवाजे बंद नहीं करना चाहते | लेकिन (सीमावर्ती प्रदेश होने के नाते) प्रदेश की सांस्कृतिक शुचिता बनाये रखने और सामाजिक संरचना के हित में यह जरूरी है कि मणिपुर के बाहर से जो भी जनसंख्या यहाँ आती है उनकी पड़ताल की जाये और आवश्यक जाँच के बाद ही उन्हें मणिपुर में प्रवेश करने दिया जाए | इसीलिए इनर लाइन परमिट (ILP) लागू करने का सुझाव मैयरा पाईबी सदा से देती रही है |

सगोलशेम खोम्दोम्बी देवी पिछली घटनाएँ याद करते हुए बताती हैं कि कई बार ऐसा भी हुआ है कि हमारे घरों के जो नौजवान काम करने के उद्देश्य से बाहर जाते थे (मणिपुर के अन्य हिस्सों में) वे लौट कर ही नहीं आये | ऐसे में उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना जरूरी था | इनर लाइन परमिट (ILP) को बनाने और जो नौजवान गायब हो जाते थे उन्हें खोजने और वापस लाने में भी मैयरा पाईबी का अहम योगदान है |

प्रश्न- आज के समय में मैयरा पाईबी समाज के युवाओं के लिए किस उद्देश्य के साथ काम कर रही है ?

खोम्दोम्बी देवी कहती हैं कि किसी भी काल-समय में विकास के पहले मानकों में अच्छी शिक्षा अनिवार्य रूप से शामिल है, इसके बिना भविष्य अधूरा है | माता-पिता और परिवार के माध्यम से युवाओं में संस्कार दिया जाना जरूरी है | युवाओं को अच्छे एवं सुलभ स्वास्थ्य सुविधाओं के साथ साथ खेलने के अवसर एवं स्थान उपलब्ध कराना | लेकाई स्तर पर गेम क्लब खुलवाना | हमारे विचार से यह आज के समय की मांग है | सम्भव हुआ तो हम अपनी जगह जो निशाबंदी या मैयरा पाईबी के क्रियाकलापों के लिए आरक्षित है वहां हमारे क्षेत्र के युवाओं के लिये एक खेल का मैदान (प्लेग्राउंड) बना कर देंगें |

प्रश्न- मैयरा पाईबी अपना समूह किस प्रकार से संगठित करती और आगे बढ़ाती हैं ?

खोम्दोम्बी देवी इस बारे में बताती हैं कि मैयरा पायिबी के संगठनात्मक ढांचे को तीन भागों में प्रादेशिक, जिला और लेकाई (मोहल्ला) स्तर पर बांटा गया है | हम दस लेकाई (मोहल्लों) को मिलाकर एक समूह बनाते हैं | या अधिक मजबूत करने के लिए 20 लेइकायी को मिलाकर भी एक समूह बनाते हैं | इस प्रकार 10-20 मोहल्लों को मिलाकर मैयरा पयीबी का एक समूह तैयार किया जाता है | हमारे समूहों में जितनी अधिक मोहल्लों की महिलाएं होंगीं, समूह उतना ही अधिक मजबूत बनेगा | सभी लेकाई एक-दूसरे के लिए सहायतार्थ साथ रहती हैं | मैयरा पाईबी विवाहित महिलाओं का ही ग्रुप है |

आज मैयरा पायीबी की कुछ प्रमुख आर्गेनाइजेशन रजिस्टर्ड हो गयी हैं | जिसकी अलग-अलग शाखाएं हैं | लेकाई स्तर के मैयरा पाईबी समूह ऐसी राज्य स्तरीय कुछ प्रमुख आर्गेनाइजेशन से जुड़े भी हुए हैं | इन संगठनों में दायित्वपूर्ण पद सम्भालने के लिए-मनोबल, बुद्धिमत्ता, सामाजिक-राजनीतिक और सामयिक समझ, अपने समय की सक्रिय कार्यकर्ता और निर्भय व्यक्तित्व वाली महिला को प्राथमिकता दी जाती है |

लेकिन इसमें कोई जाति प्रथा नहीं है | सभी का इसमें स्वागत है | सभी समुदाय और धर्म के लोगों का स्वागत है | यहाँ सभी कम्युनिटी इसको एक्सेप्ट करते है | कई बार ऐसा भी हुआ है कि किसी बाहरी व्यक्ति (मयांग) पर कोई विपत्ति आई है और स्थानीय मैयरा पाईबी समूह ने उनकी सहायता की है | हम संगठित हैं इसीलिए इतनी सक्षम भी हैं | और हमारे संगठन की एकमात्र शक्ति हमारे उद्देश्यों का एक होना है |

प्रश्न- जब समाज में कभी विपत्ति आई या सेना की तरफ से कोई ऑपरेशन चलाया गया तो ऐसे में एक-दूसरे से सम्पर्क करने या विपत्ति के समय एकजुट होने के लिए क्या उपाय या पद्धति अपनाते थे ?

इमा रमानी बताती हैं कि हमारे ज़माने में जब आज की तरह फ़ोन वगैरह का इस्तेमाल शुरू नहीं हुआ था तब भी मैयरा पायिबी की संचार व्यवस्था दुरुस्त थी | आज आधुनिक संसाधन उपलब्ध होने पर यह और अधिक सुगम है | वे बताती हैं कि उस समय में बिजली के खम्बे पर पत्थर से आवाज करके गली की महिलाओं को चौकन्ना करते थे और आवश्यकता पड़ने पर उन्हें एकजुट करते थे | खम्बे पर चोट की आवाज सुनते ही काम करती महिलाएं भी तुरंत बाहर इकठ्ठा होने के लिए भागती थीं | ताकि किसी भी अनहोनी को टाला जा सके |

खोम्दोम्बी देवी बताती है कि तीन आवाज सुनकर हम लोगों को पास के हाट (कम्युनिटी हॉल) में जाकर इकठ्ठा होना होता था और यदि आवाज लगातार बजायी जा रही है तो इसे आपात स्थिति माना जाता है और सभी काम छोड़कर तुरंत इकठ्ठा होना होता है |

इमा रमानी कहती हैं कि ऐसा नहीं है कि हम केवल सेना के खिलाफ ही लामबंद होते थे | यह तो मैयरा पाईबी की नकारात्मक छवि प्रस्तुत की गयी है | सरकार तक या समाज में मैयरा पाईबी की सकारात्मक छवि प्रस्तुत नहीं की गयी है | वास्तव में हम शराब की दुकानों, महिलाओं पर होने वाले अत्याचार को रोकने के लिए और असामाजिक तत्वों के विरुद्ध इकठ्ठा होते थे |

प्रश्न- बड़े मुद्दे जो पूरे प्रदेश से सम्बन्धित हैं उसके अलावा लेकाई स्तर पर स्थानीय विकास के लिए क्या प्रयास मैयरा पाईबी समूहों द्वारा किये जाते हैं ?

जैसा कि पहले बताया मैयरा पाईबी लोकल (स्थानीय) विषयों को लेकर भी बहुत से काम करती हैं | पूरे विश्व में शायद मैयरा पाईबी ही एक ऐसा समूह है जो केवल महिलाओं के द्वारा संचालित होकर भी केवल महिलाओं की लडाई नहीं लड़ता बल्कि समाज के प्रत्येक पक्ष के साथ छोटी-से-छोटी समस्या को भी सुलझाने का प्रयास करता है | अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाता है | जैसे घरेलू हिंसा को रोकना, निशाबंदी करना (शराब सेवन व बेचने पर रोक लगाना), घरों में वैवाहिक जीवन में किसी अलगाव या समस्या में मध्यस्थता करना मैयरा पाईबी के काम का हिस्सा है | कल की आने वाली पीढियां खराब ना हों इसके लिए मैयरा पायीबी काम करती हैं | शरारती तत्वों को सुधारना, बेरोजगार युवाओं को प्रोत्साहित करके रोजगार की तरफ प्रेरित करना, शराब बेचने वालों को बंद करवाना | जो महिलाएं व्यभिचार करती हैं, या दूसरों का घर खराब करती हैं, उनको भी ठीक राह पर लाने का काम मैयरा मैयरा करती हैं |

यदि कभी बिजली का तार खेतों में टूट कर गिरने से या अन्य किसी आपदा से फसल खराब हो ने की स्थिति में, पशुधन के नुकसान के होने पर भी सरकार से मुआवजा दिलाने का काम मैयरा पयीबी करती है |

कई बार राशन बाँटने वाला तय माप से कम राशन देता है तो उसके खिलाफ भी हम आवाज उठाते हैं | मिट्टी का तेल, चावल, चीनी, या राशन का सामान आधा देना और आधा की घूसखोरी करना इस पर भी हम विरोध करते हैं और आवश्यकता पड़ने पर पूरे समाज के साथ उसके खिलाफ कार्रवाई भी करते हैं |

समाज में ऐसी अनेक महिलाएं हैं जो बहुत कौशल जानती हैं | वीमेन कोओपरेटिव सोसाइटी के माध्यम से महिलाओं को काम दिए गये कि जो महिलाएं बेकार बैठी हैं उन्हें हाथ को काम देना जैसे बुनाई, कढ़ाई आदि |

पहले लोग वर्ष में एक ही बार खेती करते थे और बाकि समय खेत खाली पड़े रहते थे तो वर्ष में एक की जगह दो बार खेती करवाने के लिए पुरुषों को प्रेरित करना, तालाब साफ़ करना, मछली का फार्म चलाना ये सब महिलाएं ही करती हैं | ये सब काम हम सब मिलकर करते हैं | कई मोहल्ले मिलकर एक साथ काम करते है | और आत्मनिर्भरता रहना ही इसका मूल मंत्र हैं |

अपनी लेकाई (गली-मोहल्ले) के मामलों से लेकर पड़ोस में होने वाले झगडे, चोरी, अंडरग्राउंड के लोगों (उग्रवादियों) द्वारा जबरन वसूली का खतरा, भाग कर विवाह कर लेना, दूसरी शादी या शादी होने के बाद भी किसी से सम्बन्ध रखना, तलाशी अभियान के बाद सेना द्वारा लोगों को ले जाने पर उन्हें विशेषकर महिलाओं को छुड़ाना जैसे सभी मामलों के सम्बन्ध में मैयरा पायिबी सक्रिय भूमिका निभाती है |

सरल शब्दों में कहें तो यह एक पंचायत का ही स्वरुप है | हमारे समाज में किसी भी प्रकार की ऐसी बाधा जिसे हम अपने स्तर पर ही सुलझा सकते हैं और समाज को विकास की दिशा में ले जाकर आत्मनिर्भर बना सकते हैं उसके लिए मैयरा पाईबी तत्पर रहती हैं |

प्रश्न- आज मैयरा पाईबी मणिपुर का बहुत बड़ा सन्गठन है | इसके अभियानों और कार्यक्रमों का आर्थिक प्रबन्धन कैसे किया जाता है ?

इमा रमानी देवी कहती हैं कि जब हमने संगठन शुरू किया था तो जहाँ आज सिटी कन्वेंशन सेंटर है वहां हमारा अर्थात नूपी समाज (आल मणिपुर वीमेन सोशल रिफार्मेशन एंड डेवलपमेंट समाज) का प्रमुख ऑफिस था लेकिन अब हम यहाँ (पैलेस कम्पाउंड में राजा भाग्यचन्द्र ओपन एयर थिएटर काम्प्लेक्स के सामने एक ईमारत की तीसरी मंजिल के एक ही हॉल में) छोटे सी जगह में सिमट कर रह गये हैं | जो संगठन के लोगों (महिला कार्यकर्ताओं) के आवास हेतु भी उपयोग में आता है | (इसी आवास पर इमा रमानी देवी से साक्षात्कार लिया गया था) | हमने अपनी मेहनत से जो ऑफिस बनाया था, उसे भी नहीं चलाना दिया गया |

खोम्दोम्बी देवी कहती हैं कि उदहारण के लिए जैसे हम (बामोनकम्पू वीमेन वेलफेयर एसोसिएशन) एक रजिस्टर्ड ग्रुप हैं | लेकिन मैयरा पाईबी के किसी समूह या संगठन को किसी भी प्रकार से कोई सरकारी सहायता नहीं मिलती है | कोई खर्चा सरकार नहीं देती | हम सब अपनी तरफ से ही खर्चा करती हैं | हम अपनी आवश्यकता और कार्यक्रम के अनुसार समाज से मांगकर आर्थिक कमी को पूरा करते हैं | कुछ कार्यक्रम करते हैं तो स्थानीय प्रधानं या विधायक से सपोर्ट लेते हैं | हम दस-दस रूपये का एक साप्ताहिक सहयोग ले लेते हैं जिससे मैयरा पयीबी के रजिस्टर्ड समूहों का खर्च चलता है | हट (कम्युनिटी हॉल) बनाने का खर्चा स्थानीय प्रधान से या विधायक से देने का आग्रह करते हैं | ऑफिस बनाने या आवश्यक सामग्री का खर्चा समर्थ व्यक्तियों के माध्यम से दान स्वरुप माँगा जात है | इम्फाल में ही पोरोमपट में ILP की लडाई में शामिल बलिदानी लोगों का स्मृति स्थल है, वहां भी हर वर्ष आर्थिक रूप से दान करते हैं |

प्रश्न- समाज के विकास के लिये समर्पित मैयरा पाईबी क्या मणिपुर प्रदेश के बाहर भी अपनी पहचान रखती है ?

खगोल्शेम खोम्दोम्बी देवी कहती हैं कि हाँ यह सही है कि यदि देश में एक विचार के सभी समूह मिलकर काम करेंगे तो कार्य और अधिक प्रभावी रूप से होगा | अन्य प्रदेशों में अन्य-अन्य नामों से अनेक महिला संगठन कार्य करते हैं | मणिपुर में मैयरा पाईबी के नाम से जाने जाते हैं | हां, यह सही है कि स्वप्रेरणा से जनित ऐसा कोई संगठित उपक्रम शायद नहीं है जैसा कि मैयरा पाईबी है | अन्य सभी (अधिकतर) रजिस्टर्ड एन.जी.ओ हैं जो महिलाओं द्वारा संचालित वा महिलाओं के लिए काम करते हैं | कई ऐसे भी स्थान हैं जहाँ आज के दौर में महिलाएं संगठित हो रही हैं और सामाजिक समस्याओं पर काम कर रही हैं और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठा रही हैं | जैसे महिला मंगल दल आदि | लेकिन वे किसी परम्परा या सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा नहीं | मैयरा पाईबी तो मणिपुर की महिलाओं को विरासत के तौर पर मिलती है | जो सैकड़ों वर्षों से चली आ रही है |

इमा रमानी देवी कहती हैं यह विचार सही है कि देश-विदेश में जाकर भी हमें अपनी उपस्थिति दर्ज करनी चाहिए और अपनी पहचान बनानी चाहिए | लेकिन हमें दूसरी भाषा नहीं आती, इसलिए हम दूसरों तक जल्दी नहीं पहुंच पाते | साथ ही संसाधनों की कमी और सांगठनिक असहयोग के कारण भी हम इसमें सफल नहीं हो पाते | इसके लिए हमें और सामर्थ्यवान होना होगा और अधिक समर्थन तथा सहयोग प्राप्त करना होगा | यदि बाहर के लोग हमसे, हमारे विचार से और हमारे उद्देश्यों से जुड़ना चाहेंगे और बुलाएँगे तो हम जरुर साथ जायेंगे |

प्रश्न- मैयरा पाईबी किस प्रकार से प्रशासन की सहायता करने में समर्थ होती है ?

इमा रमानी कहती हैं कि जब कोई परेशानी आती है तो हम उसमें नगा या कुकी या नेपाली या बाहरी नहीं देखते सिर्फ परेशानियों और समस्याओं को सुलझाने पर हमारा ध्यान केन्द्रित रहता है | आवश्यकता पड़ने पर कभी-कभी पुलिस की भी मदद ली जाती है और पुलिस की मदद की भी जाती है | यदि हमारे समाज में कोई उपद्रवी या शरारती तत्व होता है तो हम खुद ही उसे सेना को सौंप देते हैं ताकि भय का माहौल ना बने | वे कहती हैं कि समाज के इस काम को करने के लिए मैं छ: सालों तक घर के अंदर नहीं सोयी | मैयरा पाईबी के लिए मैं घर से बाहर ही रही | हम चाहते थे कि AFSPA मणिपुर से हटा दिया जाये | सेना कि लोग मनमर्जी भी करते थे | और यदि शक के आधार पर किसी को सेना ने उठा लिया और यदि वह हिरासत में मर गया तो उसके खिलाफ अपराध साबित ही कर दिया जाता था | रमानी देवी कहती हैं कि जो शरारती तत्व हैं उन्हें अवश्य ही सजा मिलनी चाहिए | जो लोग बरसों से मणिपुर में रह रहे हैं, वे यहीं के ही हैं लेकिन मणिपुर की सुरक्षा के लिए यह जरूरी है कि बाहर से आने वाले लोगों पर कुछ अंकुश लगाया जाए |

इमा रमानी गम्भीर और भावुक होते हुए कहती हैं कि अपराध हुए थे लेकिन सभी उसमें शामिल नहीं थे | वे दृढ़ता से कह रही थीं- 'गलत को हम बर्दाश्त नहीं करते थे' | हमने सेना और पुलिस से कहा था कि जानलेवा प्रताड़ना देना बिलकुल न्यायोचित नहीं है | हम भी चाहते हैं कि हमारे मणिपुर में शांति रहे लेकिन हमारे नौजवानों की जान की कीमत पर नहीं |

रमानी देवी कहती हैं कि आज यह आन्दोलन सैकड़ों वर्ष पुराना हो गया है | जब खम्बे पर चोट करके हम महिलाओं को सावधान होने और इकठ्ठा होने का इशारा करते थे तो इस

आवाज पर पुलिस सवाल करने लगी थी कि वे लालटेन बजा कर या खम्बे पर आवाज करके शरारती तत्वों को बचा रहे हैं और उन्हें भागने का संकेत कर रहे हैं | लेकिन हमने उन्हें समझाया कि हम सब इकठ्ठा होने के लिए इस संकेत का प्रयोग करते हैं | यदि कोई हमारे समाज का व्यक्ति गलत करेगा चाहे वह मेरा बच्चा हो, हम उसे बचायेंगे नहीं | आपके सुपुर्द ही करेंगे | यह करके हम आपकी मदद ही करते हैं लेकिन आपसे भी अपेक्षा है कि जिन लोगों को शक के कारण आप हिरासत में लेते हैं उन्हें शारीरिक पीड़ा, और अपंग कर देने वाली शारीरिक प्रताड़ना नहीं दें, क्यूंकि सम्भव है वह व्यक्ति वैसा ना हो या सुधर सकता हो |

अब अपनी उम्र का 9वां दशक पार करने आयीं इमा रमानी देवी बड़ी उम्मीद के साथ कहती हैं कि हम समाज के लिए काम करते हैं , लेकिन सरकारी सहायता तो दूर हमारा सही संदेश भी अभी तक सरकार तक नहीं पहुंचा, हमारी छवि गलत प्रस्तुत की गयी | हमें राजनीति से कुछ नहीं लेना लेकिन वर्तमान सरकार की अभी तक की गतिविधियों से उन्हें आशा है कि इस दिशा में वह जरूर कुछ ठोस कदम उठाएगी जिस से मणिपुर को आतंक और उसके कारण होने वाले नुकसानों से निजात मिल सके | हम चाहते हैं कि मणिपुर के सभी लोग प्यार-मोहब्बत से रहें |